
Shri Vrishanandana Ashtakam

श्रीवृषनन्दनाष्टकम्

Document Information



Text title : Shri Vrishanandana Ashtakam

File name : vRRiShanandanAShTakam.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna, aShTaka

Location : doc_vishhnu

Author : achinnyAnandabrahmachArI

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 9, 2024

sanskritdocuments.org



श्रीवृषनन्दनाष्टकम्



(द्रुतविलम्बित वृत्तम्)
वदनतर्जित-रम्य-हिमांशु के
कमलकोमल-पत्रविलोचने ।
मदनमोहन-सुन्दर-विग्रहे
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ १ ॥

मुनिसमाज-सदासन-संस्थिते
पुरटनूपुर-रम्यपदाम्बुजे ।
उदरनाभि-वलित्रय-राजिते
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ २ ॥

कुसुममाल-विशालभुजान्तरे
मधुरहासविलास-मुखाम्बुजे ।
रुचिर-केसरचन्दन-चर्चिते
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ३ ॥

जघन-काञ्चन-भासुरमेखले
ललितमौक्तिकहार-मनोहरे ।
कुटिल-मञ्जुलनील-शिरोरुहे
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ४ ॥

विशदचन्द्र-करप्रभ-शेखरे
प्रणतपापविनाश-दिवाकरे ।
धृतवलक्ष-विशाल-घनाम्बरे
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ५ ॥


क्षपितभक्त-मनोभव-वेदने
कनकभूषण-हारि-करद्वये ।
अरुणराग-शिरःपट-शोभिते

भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ६ ॥


तिलकलक्षण-राजित-गण्डके
श्रुतिसितेतर-बिन्दु-मनोहरे ।
श्रवणकुण्डल-शालि-कपोलके
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ७ ॥

मधुरवाक्य-सुधारस-पोषके
निजजनोदित-योगरहस्यके ।
वदति संसदि कृष्ण-निरूपणं
भवहरेऽस्तु मनो वृषनन्दने ॥ ८ ॥

श्री अचिद्भ्यानन्दब्रह्मचारीविरचितं श्रीवृषनन्दनाष्टकं सम्पूर्णम् ।

——
Shri Vrishanandana Ashtakam

pdf was typeset on August 9, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

